Gyansindhu Competition Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share &

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

गोस्वामी तुलसीदास

धनुष- भंग

पद्यांश आधारित प्रश्नोत्तर

(1) उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बालपतंग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ॥
नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी ॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
भए बिसोक कोक मुनि देवा। बरसहिं सुमन जनावहिं सेवा ॥
गुरु पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयसु मागा ॥
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजरगामी ॥
चलत राम सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भए सुखारी ॥
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे ॥
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं। तोरहुँ राम गनेस गोसाईं।

प्रसंग - धनुष - तोड़ने के लिए अपने मंच से उठे श्रीराम को देखकर स्वयंवर-सभा में उपस्थित लोगों की क्या स्थिति हुई, इसका वर्णन प्रस्तुत काव्यांश में किया गया है।

(1) भाषा – अवधी (2) रस- श्रृंगार (3) गुण – प्रसाद (4) अलंकार - रूपक, उपमा (5) छन्द – चौपाई और दोहा।

प्रश्न : (क) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर : (क) सन्दर्भ- प्रस्तुतं काव्यांश गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'श्रीरामचरितमानस' के 'बालकाण्ड' से उद्धृत है। यह हमारी पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खण्ड' में 'धनुष भंग' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित है।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe)

उ. अब क्योंकि राम शर्त पूरी करने के लिए खड़े हो गए हैं; अतः उनकी वह अँधियारी धुंधली सी आशारूपी रात्रि - नष्ट हो गई है; क्योंकि वे यह जान चुके हैं कि अब धनुष-भंग हो ही जाएगा। अभी तक वे सभी राजागण अपनी वीरता और सम्पन्नता का बढ़-चढ़कर जो बखान कर रहे थे, उनके वचनरूपी तारों का वह समूह अब चमकना बन्द हो गया है। अर्थात् उन सभी राजाओं की बोलती अब बन्द हो गई है। वहाँ अभिमानी राजारूपी जितने भी कुमुद थे, वे सूर्यरूपी राम को देखकर मुरझा गए और कपटी राजाओंरूपी उल्लू छिप गए।

(ग) चकवों का शोक किस प्रकार दूर हो गया है ?"

उ. अब क्योंकि रामरूपी सूर्य का उदय होने के कारण रात्रि समाप्त हो गई है; अतः मुनि और देवताओंरूपी चकवों का शोक दूर हो गया है। अभी तक धनुष के तोड़े जाने की शंका के कारण दुःखरूपी जो रात्रि छाई थी उसके कारण मुनि और देवरूपी चकवों का सुखरूपी चकवी से मिलन होता नहीं दिखाई दे रहा था।

(घ) जनकपुरी के सभी नर-नारियों ने गणेश भगवान् से क्या. प्रार्थना की?

उ. जनकपुरी के सभी नर-नारियों ने गणेश भगवान् से यह प्रार्थना की कि अगर हमारे कुछ पुण्य शेष हों तो श्रीराम शिव के धनुष कमल - नाल की भाँति सहज ही तोड़ डालें।

(2) प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि, राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु, बिधु मंडल डोल ॥
गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी। प्रगट न लाज निसा अवलोकी ॥
लोचन जल रह लोचन कोना। जैसें परम कृपन कर सोना ॥
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरजु प्रतीति उर आनी ॥
तन मन बचन मोर पनु साचा। रघुपति पद सरोज चितु राचा ॥
तौ भगवानु सकल उर बासी करिहि मोहि रघुबर के दासी ॥
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू ॥

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना। कृपानिधान राम सबु जाना ॥
सियहि बिलोकि तकेे धनु कैसें चितव गरुड़ लघु व्यालहि जैसें ॥

प्रसंग . सीताजी और श्रीराम के मन के सात्विक भावों का अत्यन्त सुन्दर चित्रण यहाँ हुआ है।

(1) भाषा अवधी (2) रस श्रृंगार (3) गुण - माधुर्य। (4) अलंकार - उपमा, रूपक। (5) छन्द – चौपाई, दोहा।

प्रश्न : (क) प्रस्तुत पद्यांश में किसके अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण किया गया है?

उ० - सीता जी के अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण किया गया है|

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ. क्योंकि जिसका जिस पर सच्चा स्नेह होता है, वह उसे मिलता ही है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। प्रभु श्रीराम की ओर देखकर सीताजी ने अपने शरीर के द्वारा प्रेम ठान लिया अर्थात् यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि यह शरीर इन्हीं का होकर रहेगा अथवा रहेगा ही नहीं। उनकी इस भावना को कृपा के निधान श्रीराम ने सब प्रकार से जान लिया।

(ग) कृपा के निधान राम ने क्या कुछ जान लिया?

उ. कृपा के निधान राम ने सीताजी के मन में अपने प्रति उत्पन्न हुए प्रगाढ़ प्रेम की भावना और दृढ़ निश्चय को जान लिया।

(घ) राम ने धनुष को कैसे देखा?

उ. राम ने धनुष को इस प्रकार देखा, जैसे गरुड़ किसी छोटे से सर्प को देखते हैं।

(3) लखन लखेउ रघुबंसमनि, ताकेउ हर कोदंडु |
पुलकि गात बोले बचन, चरन चापि ब्रह्मांडु ॥
दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला ॥
राम चहहिं संकर धनु तोरा होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥
चाप समीप रामु जब आए। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए ॥

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

सब कर संसठ अरु अग्यानू मंद महीपन्ह कर अभिमानू ।।
भृगुपति केरि गरब गरुआई सुर मुनिवरन्ह केरि कदराई ||
सिय कर सोचु जनक पछितावा रानिन्ह कर दारुन दुख दावा ।।
संभुचाप बड़ बोहितु पाई। चढ़े जाइ सब संगु बनाई ||
राम बाहु बल सिंधु अपारू । चहत पारु नहिं कोउ कड़हारू ॥
राम बिलोके लोग सब, चित्र लिखे से देखि।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेषि ॥

प्रसंग- लक्ष्मणजी धरती को धारण करनेवाले कच्छप, शेषनाग और वाराह को सावधान करते हैं कि श्रीराम शिवधनुष को तोड़ना चाहते हैं; अतः आप सब पृथ्वी को सँभाले रखना। इसी का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत काव्यांश में हुआ है।

(1) भाषा अवधी । (2) रस- श्रृंगार । (3) गुण— प्रसाद। (4) अलंकार-रूपक और उपमा। (5) छन्द चौपाई और दोहा।

प्रश्न : (क) लक्ष्मणजी ने ब्रह्माण्ड को अपने चरणों से दबाकर क्यों रखा?

उत्तर : (क) राम द्वारा शिव धनुष का खण्डन किए जाने पर कहीं ब्रह्माण्ड में उथल - पुथल न मच जाए, इसलिए लक्ष्मणजी ने ब्रह्माण्ड को अपने चरणों से दबाकर रखा।

(ख) राम द्वारा धनुष तोड़े जाने पर लक्ष्मण को क्या आशंका थी और उसके निवारण के लिए उन्होंने क्या किया?

उ. राम द्वारा धनुष तोड़े जाने पर लक्ष्मण को यह आशंका थी कि धनुष- भंग की टंकार से यह पृथ्वी अवश्य डगमगा जाएगी; अतः इस आशंका के निवारण के लिए इन्होंने पृथ्वी को धारण करने वाले दिग्गजों, कच्छप, शेषनाग और वाराह सभी को निर्देश दिया कि वे सावधानीपूर्वक पृथ्वी को सँभालकर रखें।

(ग) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ. जब श्रीराम धनुष के पास आए तब सभी स्त्री-पुरुषों ने देवताओं और अपने पुण्यों को मनाया कि यह धनुष- भंग हो जाए; क्योंकि सभी लोगों को यह सन्देह

और अज्ञान है कि राम उस धनुष को नहीं तोड़ पाएँगे। नीच राजाओं को भी यही अभिमान है कि जब हम यह धनुष नहीं तोड़ पाए तो फिर राम की भला क्या गिनती!

(घ) 'राम बाहु बल सिन्धु अपारू' में कौन-सा अलंकार है ?

उ. राम बाहुबल सिन्धु अपारू' में रूपक अलंकार है।

वन पथ पर

(1) पुर तें निकसी रघुबीर बधू, धरि धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूख गए मधुराधर वै ॥
फिरि बूझति हैं- " चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौ कित है?"
तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै ॥ 1॥

प्रसंग - सुकोमल अंगोवाली सीताजी वन पथ पर जा रही हैं। इस पद में गोस्वामीजी ने उनकी व्याकुलता का चित्रण किया है।

(1)भाषा-भावानुकूल, ब्रजभाषा। (2) रस — श्रृंगार। (3) गुण - प्रसाद। (4) अलंकार — अनुप्रास, स्वभावोक्ति तथा - अत्युक्ति। (5) छन्द सवैया

प्रश्न : (क) उपर्युक्त काव्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर : (क) सन्दर्भ - प्रस्तुत छन्द महाकवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' के 'अयोध्याकाण्ड' से उद्धृत है। यह हमारी पाठ्यपुस्तक के 'काव्य खण्ड' में 'वन पथ पर' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित है।

(ख) पुर से कौन निकली ?

उ. पुर से राम की प्रिया (पत्नी) सीताजी निकलीं।

(ग) मार्ग में दो पग रखते ही क्या हुआ?

उ. सीताजी के मार्ग में दो पग रखते ही उनके माथे पर पसीने की बूँदें झलक आई और उनके कोमल होंठ प्यास से सूख गए।

(घ) सीताजी ने राम से क्या पूछा?

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) Visit For All PDF Files Download Free

उ. सीताजी ने राम से पूछा "हमें अभी कितना और चलना है और आप अपने लिए पर्णकुटी कहाँ बनाएँगे?"

(2) जल को गए लक्खन हैं लरिका, परिखौ, पिय! छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेऊ बयारि करौं, अरु पायँ पखारिहौं भूभुरि डाढ़े ॥
तुलसी रघुवीर प्रिया स्रम जानि के, बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
जानकी नाह को नेह लख्यौ, पुलको तनु बारि बिलोचन बाढ़े

प्रसंग — श्रीराम को वनवास की आज्ञा हुई है। वे लक्ष्मण और सीता के साथ वन की ओर चल पड़े। सीताजी के माथे पर पसीने की बूँदें झलक आई इस स्थल पर सीताजी की व्याकुलता और उनके प्रति श्रीराम के प्रेम का सजीव वर्णन हुआ है।

(1)भाषा – प्रज (2) रस- श्रृंगार। (3) गुण - प्रसाद। (4) अलंकार — अनुप्रास। (5) छन्द — सवैया।

प्रश्न (क) सीताजी किसकी प्रतीक्षा करने के लिए कहती हैं?

उत्तर (क) सीताजी जल लेने के लिए गए हुए लक्ष्मणजी की प्रतीक्षा करने के लिए राम से कहती हैं।

(ख) प्रतीक्षाकाल को सीताजी कैसे व्यतीत करना चाहती है?

उ. प्रतीक्षाकाल को सीताजी किसी पेड़ की छाया में बैठकर अपने पति राम का पसीना पोंछकर और पंखे से हवा करके उसे सुखा देने के साथ-साथ उनके बालू में तपे हुए पैरों को जल से धोकर शीतल करके बिताना चाहती हैं।

(ग) राम ने सीताजी को थका हुआ जानकर क्या किया?

उ. राम ने सीताजी को थका हुआ जानकर पेड़ की छाया में बैठकर बहुत देर तक उनके पैरों से काँटे निकाले।

(घ) सीताजी की आँखों में आँसू क्यों छलछला आए?

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free
Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

उ. अपने प्रति अपने स्वामी का प्रेम देखकर सीताजी का शरीर पुलकित हो उठा और भावुकता में उनका आँखों से आँसू छलछला आए।

रानी मैं जानी अजानी महा, पबि पाहन हूँ ते कठोर हियो है।
राजहु काज अकाज न जान्यो, कह्यो तिय को जिन कान कियो है ॥
ऐसी मनोहर मूरति ये, बिछुरे कैसे प्रीतम' लोग जियो है ? |
आँखिन में, सखि ! राखिबे जोग, इन्हें किमि के बनवास दियो है ? ॥

प्रसंग - यहाँ ग्रामीण स्त्रियों के माध्यम से राजा दशरथ और कैकेयी की निष्ठुरता का वर्णन हुआ है।

(1)भाषा - मुहावरेदार ब्रजभाषा। (2) रस - श्रृंगार और करुण (3) गुण माधुर्य (4) अलंकार अनुप्रास (5) छन्द- सर्वया।

प्रश्न (क) ग्रामीण स्त्री का कैकेयी के विषय में क्या दृष्टिकोण है?

उत्तर : (क) ग्रामीण स्त्री का कैकेयी के विषय में यह दृष्टिकोण है कि वह बड़ी अज्ञानी अर्थात् मूर्ख हैं। उसका हृदय पत्थर और वज्र से कठोर है।

(ख) राजा दशरथ के विषय में ग्रामीण स्त्री का क्या कहना है?

उ. राजा दशरथ के विषय में ग्रामीण स्त्री का कहना है कि उन्होंने भी इन राजकुमारों को वन भेजते समय उचित-अनुचित का विचार नहीं किया और केवल पत्नी के कहने पर ही इन्हें वन में भेज दिया।

(4) सीस जटा, उर बाहु बिसाल, बिलोचन लाल, तिरीछी सी भीहैं।
तून सरासन बान धरे, तुलसी बन मारग में सुठि सोहैं।
सादर बारहिं बार सुभाव चितै तुम त्यों हमरो मन मोहैं।
पूछति ग्राम बधू सिय सों' कहाँ साँवरे से, सखि रावरे को हैं? ' ॥

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

प्रसंग - श्रीराम लक्ष्मण और सीता के साथ वन में जा रहे हैं। मार्ग में ग्रामीण बधुएँ सीताजी से राम के बारे में पूछती है और उनसे परिहास भी करती हैं। इस प्रसंग का चित्रण करते हुए तुलसीदासजी कहते हैं—

(1)भाषा - ब्रज (2) रस श्रृंगार (3) गुण प्रसाद और माधुर्य (4) | अलंकार — अनुप्रास। (5) छन्द-सवैया।

प्रश्न : (क) यहाँ कौन किससे प्रश्न कर रहा है?

उत्तर: (क) यहाँ ग्रामीण स्त्रियां सीताजी से प्रश्न कर रही हैं।

(ख) राम की किस चेष्टा से ग्रामीण वधुओं के मन में उनके विषय में जानने की उत्सुकता जाग्रत हो रही है ?

उ. राम वार-बार आदर और रुचि के साथ सीताजी की ओर देखते हैं, उनकी इसी चेष्टा के कारण ग्रामीण वधुओं के मन में उनके विषय में जानने की उत्सुकता जाग्रत हो रही है।

(ग) ग्रामीण स्त्रियों का सीता जी के सखी कहकर सम्बोधित करना उनकी किस प्रवृत्ति का द्योतक है?

उ. ग्रामीण स्त्रियों का सीताजी को सखी कहकर सम्बोधित करना उनकी मिलनसार और सरल प्रवृत्ति का द्योतक है।

सुनि बैन सुधारस माने, सयानी हैं जानकी जानी भली।
तिरछे करि नैन दे सैन तिन्हें समुझाइ कछू मुसकाइ चली॥
तुलसी तेहि अवसर सोहैं सबै अवलोकति लोचन लाहु अली।
अनुराग तड़ाग में भानु उदै बिगसीं मनो मंजुल कंज-कली॥

प्रसंग — ग्रामबालाओं ने सीताजी से उनके पति के विषय में जानकारी करनी चाही। इस पर सीताजी ने उन्हें संकेत से ही सबकुछ बता दिया।

(1)भाषा - ब्रजा (2) रस- श्रृंगार (3) गुण – माधुर्य। —। (4) अलंकार - रूपक, उत्प्रेक्षा और अनुप्रास। (5) छन्द - सवैया।

प्रश्न (क) जानकीजी ने ग्रामीण स्त्रियों के विषय में भली-भाँति - कौन-सी बात जान ली?

Gyansindhu Competition Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share &

उत्तर : (क) जानकीजी ने गाँव की स्त्रियों की अमृतमयी वाणी सुनकर उनके विषय में यह बात भली-भाँति जान ली कि ये स्त्रियाँ बहुत चतुर हैं।

(ख) जानकीजी की ने ग्रामीण स्त्रियों के प्रश्न का उत्तर उन्हें किस प्रकार दिया?

उ. जानकीजी ने तिरछे नेत्र के इशारे से मुस्कराकर ग्रामीण स्त्रियों के प्रश्न का उत्तर उन्हें दे दिया है कि वह साँवले सलौने उनके क्या लगते हैं।

(ग) काव्यांश की अन्तिम पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

उ. काव्यांश की अन्तिम पंक्ति में रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार है।

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe) : www.gyansindhuclasses.com Visit For All PDF Files Download Free

Gyansindhu Coaching Classes YouTube Channel Hindi & Sanskrit By : - Arunesh Sir Please Visit : www.gyansindhuclasses.com (Like, Share & Subscribe)